ISSN 2277 - 9264

यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका

शोध और सृजन की त्रैमासिक पत्रिका

अक्तूबर - दिसंबर, 2024

अंक - 4

हिन्दी अकादमी, हैदराबाद

संकल्य

52 वर्षों से निरंतर
दक्षिण से प्रकाशित

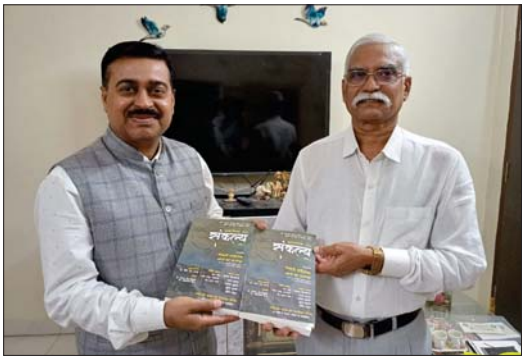

'संकल्य' – तिब्बती साहित्यिक विशेषांक दिखाते हुए प्रधान संपादक प्रो. आर.एस. सर्राजु, अतिथि संपादक प्रो. भीम सिंह एवं संपादक डॉ. गोरख नाथ तिवारी।

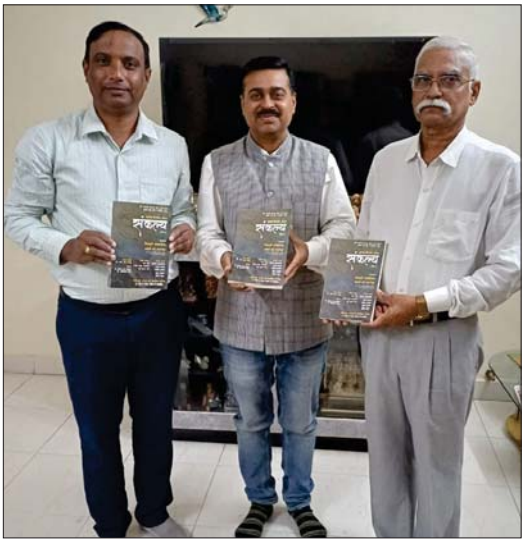

प्रधान संपादक प्रो. आर.एस. सर्राजु के साथ संपादक डॉ. गोरख नाथ तिवारी तथा डॉ. साईनाथ चपले

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के साथ साक्षात्कार लेते हुए डॉ. गोरख नाथ तिवारी

डॉ. ताडूरी गंगाधर, एम.डी., डी.एम., प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, नेफ्रोलॉजी, निम्स तथा डॉ. पल्लवी उप्पल, एम.डी.,डी.एम., सीनियर रेसिडेंट, नेफ्रोलॉजी, निम्स, हैदराबाद को 'संकल्य' विशेषांक भेंट करते हुए श्री लोलारक नाथ तिवारी एवं डॉ. गोरख नाथ तिवारी

ISSN : 2277-9264

यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्प

त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–4, अक्टूबर–दिसंबर, 2024

प्रधान संपादक
प्रो. आर. एस. सर्राजु

प्रेरणास्रोत
विवेकी राय एवं
प्रो. टी. मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
सुश्री कविता ठाकुर

संपादक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
प्रो. जयंत कर शर्मा
प्रो. प्रभाकर त्रिपाठी
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र

प्रबंध संपादक
रेखा तिवारी

प्रूफ रीडर
प्रमोद कुमार मणि त्रिपाठी

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा (विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री)

प्रकाशक
डॉ. गोरख नाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय
प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- **हिंदी अकादमी** तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित **'संकल्य'** त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक हैं।

शुल्क भेजने का पता :
मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ संख्या 10 पर बैंक डिटेल देखें।

सचिव : डॉ. गोरख नाथ तिवारी
मकान नं. 22–7/7/2/ए, जय भवानी नगर,
रालागुडा, सिद्दिल गुट्टा कमान, शमशाबाद, के.वी. रंगारेड्डी,
हैदराबाद– 501218 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 9032117105

मूल्य :
एक अंक का मूल्य रु. 125/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन सदस्यता :** रु.6,000/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** सदस्यता : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/–

आवरण चित्र
- नर्मदा प्रसाद उपाध्याय (वरिष्ठ साहित्यकार/चित्रकार)

मुद्रक :
कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्य त्रैमासिक

वर्ष : 52 : अंक–4, अक्टूबर–दिसंबर, 2024

अनुक्रम Contents

संपादकीय : : प्रो. आर. एस. सर्राजु 06

साक्षात्कार

प्रो. सियाराम तिवारी से डॉ. जयंत कर शर्मा की भेंटवार्ता : 08

आलेख

1. जीवन की अनुभूतियों को बयाँ करता 'छप्पर में उड़ते मोरपंख' : प्रो. सदानंद भोसले, अनिल शिवाजी झोल 11
2. चंद्रकांता के उपन्यासों में अभिव्यक्त चेतना के विविध रूप : शिल्पा एम., प्रो. डी.आर. जय प्रकाश 14
3. '17 रानडे रोड' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन का बोध : डॉ. विनोद बाबूराव मेघशाम 18
4. भारतीय ज्ञान परंपरा में सिद्ध एवं नाथ साहित्य : रेनू कुन्डू 24
5. डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक के कथा साहित्य में भारतीय संस्कृति : परमेश्वरी 27
6. महान समाज सुधारक संत गुरु घासीदास और उनके सतनाम् आंदोलन का प्रभाव : चंद्रकांत सोनवानी 30
7. साहित्य और कला : आपसी अंतर्संबंधों का समायोजन : डॉ. प्रकाश दास खाण्डेय 34
8. हिंदी कवयित्रियों के काव्य में मानवीय मूल्य : डॉ. रगड़े परसराम रामजी 39
9. काशीनाथ सिंह के 'महुआचरित' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन : डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर 43
10. स्वयं प्रकाश के उपन्यासों में जनवादी चेतना : मोनी 46
11. उपन्यास 'गाँव भीतर गाँव' में पुरुष वर्चस्व को चुनौती देती ग्रामीण स्त्री : अनिता 51
12. रीति विरुद्ध कवि शमशेर : डॉ. सुषमा कुमारी 55
13. डॉ. ब्रजलाल वर्मा की दृष्टि में डॉ. भीमराव अंबेडकर का समाज सुधार : सोनू कुमार यादव, प्रो. राजेश कुमार तिवारी 60
14. यमदीप उपन्यास में किन्नर विमर्श : डॉ. नवनाथ गाड़ेकर 64
15. भोजपुरी लोकसाहित्य में संचार के केंद्रीय विमर्श के तत्व : डॉ. गौरव रंजन, डॉ. सुजीत कुमार 70

16. संजीव के उपन्यासों में आदिवासी जीवन संघर्ष : डॉ. नवीन नंदवाना 75
17. हिंदी–कन्नड़ के प्रारंभिक उपन्यासों का अनुशीलन : डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील 81
तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद : डॉ. राजशेखर उमेश जाधव 85
18. इक्कीसवीं सदी की आदिवासी हिंदी कविताओं में पारिस्थितिकीय चिंतन : मो. जुबैर अंसारी 90
19. स्मृतिकालीन समाज : धर्मशास्त्र में नारी चित्रण : देवादित्य दास, प्रो. वेदप्रकाश मिश्र 95
20. हिंदी भाषा का वैज्ञानिक और तकनीकी विकास : डॉ. पूनम देवी 102
21. आरती लोकेश के साहित्य का विषय–वैविध्य : प्रोमिला 107
22. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'जूठन' की प्रासंगिकता : डॉ.मोहम्मद जमील अहमद 113
23. वेदकालीन स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति : वीना रानी 117
24. हिंदी निबंधकारों की दृष्टि में लोक और प्रकृति : सुजाता कुमारी 121
25. उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में स्त्री समाज–मनोवैज्ञानिक अध्ययन : सलमान 125
26. मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में चित्रित दलित चेतना : डॉ. कृष्णा डी. लमाणि 130
27. बालकृष्ण भट्ट का आलोचना कर्म : डॉ. बेंद्रे बसवेश्वर नागोराव 135
28. 'कामना' नाटक में चित्रित सामाजिक संघर्ष : डॉ. मोहम्मद नयाज पाशा 141
29. हिंदी कविताओं में चित्रित आदिवासियों के प्रतिरोध का स्वर : डॉ. एम. अब्दुल रजाक 146
30. निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी विमर्श : डॉ. गणशेटवार साईनाथ नागनाथ 152
31. 'कबीर' और 'बसवण्णा' के दर्शन : एक विवेचन : डॉ. श्रीधर पीडी 158
32. हिंदी भाषा में सोशल मीडिया का विस्तार : डॉ. रमा शर्मा, प्रो. भारत भूषण 165
33. 'रेहन पर रग्घू' में भूमंडलीकरण और समाज : डॉ. रत्नेश कुमार यादव 170
34. जीवन, साहित्य और वसंत का अंतर्संबंध : डॉ. चंद्रिका चौधरी 177
35. खासी लोक साहित्य : सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष : प्रो. सुशील कुमार शर्मा 183

36. प्रेमचंद के उपन्यासों में अस्तित्व से जूझती भारतीय नारी : डॉ. रूपा कुमारी 189
37. इक्कीसवीं सदी का हिंदी महिला साहित्य और प्रकृति वर्णन : पूनम कुमारी, प्रो. सुशील कुमार शर्मा 193
38. तेलुगु भाषी क्षेत्र में हिंदी शिक्षण की स्थिति : चुनौतियाँ और संभावनाएँ : प्रो. गंगाधर वानोडे 198
40. सूरदास और माधवदेव के वात्सल्य वर्णन : मनिका राभा 205
41. 'कील और कसक' कहानी में दाम्पत्य मूल्य : एक दृष्टि : स्निग्धा सिंह 210
42. अनुवाद : समस्याएँ एवं समाधान (मराठी के संदर्भ में) : प्रो. वर्षा सहदेव 217
43. हिंदी का अंकीकरण : स्वरूप, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ : डॉ. राजेश कुमार 221
44. हिंदी उपन्यासों में किन्नर जीवन का सामाजिक पक्ष : दिवेश कुमार चंद्रा, प्रो. सुशील कुमार शर्मा 227
45. अखिलेश की 'ग्रहण' कहानी में वर्णगत चेतना के बरअक्स दलित–चेतना : चतुरानन झा 232
46. पाप और पुण्य के अंतर्द्वंद्व में मानव मन की पड़ताल : चित्रलेखा : डॉ. एस. प्रीति 237
47. गोवालपरीया लोकगीतों में विरह की अभिव्यंजना : सुनाली बरगोहाँइ, प्रो. सूर्यकांत त्रिपाठी 243
48. नाथ संप्रदाय के प्रवर्तक गोरखनाथ का समाधि दर्शन : गोपाल दास, डॉ. बिशम्बर सिंह रंजन 248
49. सुदर्शन वशिष्ठ की कहानियों में पहाड़ी जीवन : डालेश शर्मा, डॉ. शशिकांत मिश्र 253
50. नई कहानियों में चित्रित समाज : सीमा तम्मन्ना अंबिग 259
51. मिथक का आधुनिक संदर्भ और काशीनाथ सिंह का उपसंहार : पल्लवी फताटे, डॉ. अमरनाथ प्रजापति 263
52. ब्रजभूषण सिंह गौतम 'अनुराग' रचित 'अपने–अपने सूरज' नवगीत संग्रह में युगबोध : डॉ. अनीता 273

समीक्षा

53. भक्ति कविता में अभिव्यक्त भारत बोध का स्वरूप : डॉ. नवनीत आचार्य 277

संपादकीय

सामाजिक समरसता और लोक मंथन

प्रो. आर. एस. सर्राजु

परिवार–प्रबोधन, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी आचरण और नागरिक कर्तव्यों को लेकर भाग्यनगर (हैदराबाद–तेलंगाना) के शिल्पारामम् में 21 से 24 नवंबर 2024 को भव्य रूप से आयोजित 'लोक मंथन' कार्यक्रम में भारत की महामहिम राष्ट्रपति महोदया से लेकर भारतभर के कई चिंतकों और विद्वानों ने भारत की देशीयता के आधार पर देश का भविष्य निर्माण संबंधी कई चर्चाएँ कीं। 'लोक मंथन' कार्यक्रम के केंद्र बिंदु में लोक विचार, लोक व्यवहार, लोक व्यवस्था आदि रहे। इस कार्यक्रम में मंथन के अलावा समानांतर सांस्कृतिक सत्र लगातार चार दिनों तक चले। करीब तीन लाख दर्शक इन कार्यक्रमों को देखने आए थे। भारतभर के विशेष अंचलों के खाद्य पदार्थों की दुकानें भी खुलीं और भोजन उत्सव भी मनाया गया। वास्तव में यह कार्यक्रम 'लोक मंथन' के लिए आयोजित किया गया था। लोक और शास्त्र को अलग करके देखने की परंपरा ज्ञान के क्षेत्र में दिखाई देती है, लेकिन वास्तव में शास्त्र, लोक–विचार, लोक–व्यवहार और लोक–व्यवस्था से भिन्न नहीं होता है। इसलिए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने यह कहा कि लोक का अर्थ वनवासी, गिरिजन या गाँवों में रहने वाले ग्रामीण नहीं हैं। गाँवों या शहरों में रहने वाले जिनको पुस्तकों के परे व्यवहार का ज्ञान है, वे सब लोक की सीमा में आ जाते हैं। वे सामान्य देशी जीवन बिताते हैं। लोक के अध्ययन के आधार पर ही शास्त्रों का ज्ञान व्यापक होता जाता है। लोक का ज्ञान मात्र परंपराओं का संग्रह नहीं है, वह युगानुरूप मनुष्य के व्यवहार को बेहतर करता है। वह मनुष्य समाज को अपने दायित्वों और अधिकारों का बोध कराता है। इसके बल पर एक ऐसी जीवन दृष्टि का विकास होता है, जिसके बल पर सामाजिक एकता, सामूहिकता, बंधुता और सह अस्तित्व का भावबोध विकसित होता है। समाज के प्रत्येक सदस्य को यह अपनेपन का बोध कराता है। 'भारतीयता' का अर्थ यही है कि देशी संस्कृति के बल पर सामूहिक मूल्य विकसित करें। भारतीय समाज में आरंभ से भी सामूहिकता की भावना को प्रोत्साहित किया गया है। ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि–

"समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तामेषाम्।
समानं मन्त्रभिः मन्त्रये वः
समानेन वे हविषा जुहोमि।।"